

एक युग दृष्टा और प्रकृतिवादी कलाकार जगदीश स्वामीनाथन

प्राप्ति: 08.09.2026
स्वीकृत: 24.09.2026

81

कु० सीमा

शोध छात्रा

मेरठ कॉलेज, मेरठ

ईमेल: shersinghmailk5@gmail.com

प्रो० अंजू चौधरी

ललित कला विभाग

मेरठ कॉलेज, मेरठ

सारांश

प्रकृति चित्रकार एक ऐसा स्वतन्त्र व्यक्तित्व हैं, जो अपनी कला के माध्यम से जन सामान्य के अन्तर्मुख पर प्रकृति के प्रति, प्रेम, उसके संरक्षण एवं मानव कल्याण की भावना को उजागर करता हैं। ये कलाकार समाज की वर्तमान परिस्थितियों एवं विसंगतियों का आकलन कर अपनी तूलिका से गहरे कटाक्ष करके समस्त मानव जाति को जागरूक बनाने का अथक प्रयास करते हैं। किसी भी समाज की चेतना को जगाकर पर्यावरण को बचाने में कलाकार विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। "कानून, प्रबन्धन, कठोर नियमों एवं प्रतिबंधों के माध्यम से मनुष्य के व्यवहार को एक निश्चित समय के लिए नियंत्रित या परिवर्तित किया जा सकता हैं, किन्तु कला के माध्यम से मानव के विचारों एवं दृष्टिकोण और मानसिकता में स्थायी परिवर्तन लाया जा सकता हैं, इसलिए कलाकार किसी भी समाज को दिशा प्रदान करने के लिए सबसे प्रभावशाली मार्गदर्शक होते हैं। किसी भी काल में कलाकार जो चित्र बनाता हैं, उस चित्र में दार्शनिक दृष्टि एवं कलापरक चिंतन एक समाज में उत्पन्न हर्ष, विषाद, द्वन्द और अनेक समस्याओं को प्रतिबिम्बित किया जाता हैं। यद्यपि वास्तविक जीवन की क्रियाओं से कला हमेशा पोषित होती हैं, जो समय काल की समस्याओं को उजागर करके उन्हें निराकरण के मार्ग पर ले जाये, उन कलाओं को समकालीन एवं जन सरोकारों से जुड़ी कला कहा जाता हैं। एक कलाकार कला के लिये यथार्थता, गहन संवेदना से जीवन के यथार्थ को द्वन्द को एक सृजनात्मक प्रभाव से दर्शाता हैं, तो कला समस्याओं के समाधान की शक्ति बन जाती हैं। प्रकृति सौन्दर्य एवं पर्यावरण विविधता, और मानव के साथ प्रकृति संबंध सदैव कला के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। प्रकृति मानव के जीवन एवं विचारों की संवेदनाओं की गहराईयों से जुड़ी हुई हैं, इसलिए प्रकृति कला एक प्रेरणा स्रोत का माध्यम भी हैं।

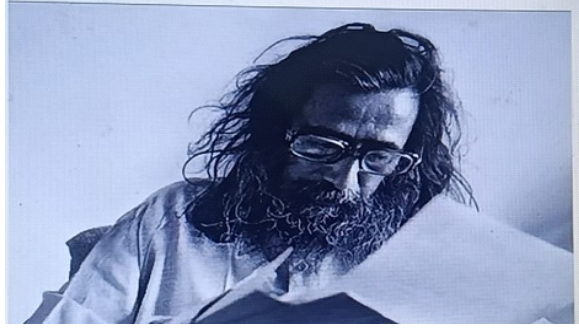
**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

मूल शब्द

स्वतन्त्र, अन्तर्मन, मानव कल्याण, उजागर, परिस्थितियों, विसंगतियों, आंकलन, जागरूक,
अथक प्रयास, संवेदनशील, मस्तिष्क, चेतना, पर्यावरण, कानून प्रबन्धन, कठोर नियमों,
प्रभावशाली, मार्गदर्शक।

प्रस्तावना

स्वामीनाथन ने प्रकृति कला को अपनी कला की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का आधार बनाकर कला में मनुष्य और प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्धों की गहन खोज की है और निरन्तर इस प्रश्न पर विचार किया कि पृथ्वी पर मनुष्य के आगमन, उसके जीवन का वास्तविक अर्थ एवं उद्देश्य क्या हैं, इसलिये उनकी कला के बौद्धिक आग्रहों को भी हम सहजता से समझ सकते हैं और उसमें अभिव्यक्त कलात्मक संवेदनाओं को महसूस कर सकते हैं। उनकी कला प्रकृति के प्रति गहरे-प्रेम एवं संवेदनशीलता को दर्शाती है, जिसमें फूल-पत्तियाँ, पर्वत, चिड़ियों तथा प्राकृतिक तत्वों के प्रति विशेष अनुराग दिखाई देता है। यह कला प्रेम की बानी को दर्शाती है। यह प्रेम की बानी फूलों एवं पत्तियों को भी अर्पित है। जगदीश स्वामीनाथन समकालीन कला में प्रकृति चित्रण करने वाले महत्वपूर्ण कलाकारों में से एक हैं। उन्होंने अपनी वैचारिक दृष्टि, संवेदनशीलता और सृजनात्मक प्रतिभा के माध्यम से भारतीय चित्रकला को समृद्ध किया तथा भारतीय कला का प्रतिनिधित्व विश्व स्तर पर भी किया, उन्होंने भारतीय कला में आदिवासी संस्कृति एवं प्रकृति-आधारित कला को सर्वथा अग्रणी स्थान दिलाने का निरन्तर प्रयास किया। वे एक संवेदनशील साहित्य-सृजक भी रहे तथा महत्वपूर्ण कवि के रूप में भी जाने जाते हैं।



स्वामीनाथन बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे, जो प्रत्येक कार्य में नये उन्मेष को महत्व देते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन एक अन्वेषक, अविष्कारकर्ता और सृजनशील कलाकार के रूप में व्यतीत किया एवं कला के क्षेत्र में सतत खोज की। उन्होंने प्रचलित प्रदत्त कला परम्पराओं, रुढ़ियों और स्थापित दृष्टिकोणों से अलग हटकर अपनी विशिष्ट कलाभाषा विकसित की। इसी स्वतंत्र दृष्टि के माध्यम से स्वयं को एक महत्वपूर्ण कलाकार के रूप में स्थापित किया और अपने को सिद्ध किया। जगदीश स्वामीनाथन आधुनिक प्रकृतिवादी, आदिवासी संस्कृति को उज्ज्वल करने वाले चित्तेरे कलाकार थे। उन्हें युगदृष्टा कलाकार के रूप में भी माना जाता है, उन्होंने कला में स्वतन्त्र अनुभूतियों

और मौलिक विचारों को विशेष स्थान दिया और कला को पारंपरिक बन्धनों से मुक्त बताया। उनके व्यक्तित्व की प्रतिभा, विशिष्टता और सृजनात्मक समग्रता को शब्दों में समेटा नहीं जा सकता है। जगदीश स्वामीनाथन भारत के एक ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने विचार और सृजन दोनों स्तरों पर भारतीय चित्रकला को नवीन दृष्टि प्रदान की। उनकी यह विशिष्ट प्रतिभा को कला-जगत में बड़ी आत्मीयता से याद किया जाता है। उनकी कला कृतियाँ केवल अनुभूत ही नहीं होती अपितु वे बाँचने का आमन्त्रण भी देती हैं। स्वामीनाथन की कृतियों में रचे संसार का सत्य एक ऐसे मौलिक सर्जक का सत्य है, जो काल, इतिहास, आकांक्षा और आगत-विगत की तात्त्विकता से मुक्त है। यही कारण है कि किसी विशेष पद्धति, संरचना और सन्दर्भ में रखकर उनकी कृतियों को देखना सर्वथा असम्भव न हो तो दुष्कर अवश्य है।¹

जगदीश स्वामीनाथन ने समकालीन कला में प्रकृति चित्रण को कलात्मक प्रभावशीलता से दर्शाया है, उनके प्रकृति-चित्रों में एक विशेष उर्जा की अनुभूति होती है, जो सृजनात्मकता अन्यत्र देखने को नहीं मिलती है। 21 जून 1928 में जगदीश स्वामीनाथन का जन्म शिमला में हुआ था, उनका परिवार मूलतः तमिल क्षेत्र से सम्बन्धित था। स्वामीनाथन का परिवार एक मध्यवर्गीय शिक्षित परिवार था उनके पिता एन. वी. जगदीश अय्यर एक उच्च सरकारी अधिकारी थे और माँ जमींदार घराने से थी। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा शिमला में ही हुई थी और वहीं से उन्होंने मैट्रिक परीक्षा पास की। उनके पिता बचपन से स्वामीनाथन को उच्च शिक्षा के लिए अभिप्रेरित करते थे। स्वामीनाथन में कला चित्रण की प्रतिभा जन्मजात थी और बचपन में वे बहुत चतुर और जिद्दी स्वभाव के थे। बाद में उन्होंने इस जिद्दी स्वभाव को ही अपनी सफलता की सीढ़ी बनाया हालांकि शुरुआत में उनकी यह प्रतिभा समय, परिवेश, और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रही जिसके कारण उन्हें अनेक विषम परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ा, लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने अपनी प्रकृतिजन्य प्रतिभा को स्वीकारा और अपने जीवन का लक्ष्य बनाया।

मैट्रिक के बाद स्वामीनाथन ने प्री-मेडिकल कोर्स में दाखिला लिया, लेकिन उनका मन इसमें न लगा, जिससे वे इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गये थे। इसके बाद ने उन्होंने घर को छोड़ दिया और कलकत्ता चले गये वहाँ पर उन्होंने जीवनयापन हेतु अनेक छोटे कार्य किये जिनमें वे फुटपाथ पर ब्लैक में सिनेमा के टिकट एवं समान बेचते थे। जहाँ उन्होंने समाज की समस्या और राजनैतिक पहलुओं को निकटता से देखा। यहीं से उनका राजनैतिक जीवन शुरू हुआ और वे राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने लगे। राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में स्वामीनाथन ने अनेक प्रदर्शनों में भाग लिया वे सामाजिक एवं राजनैतिक उतार-चढ़ाव के मध्य एवं मजदूर संघ के आन्दोलन के समर्थक बने और भागीदारी भी बने और एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उभरे। 1947 में स्वामीनाथन पार्टी में मतभेद होने पर जयप्रकाश नारायण जो कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेता था के समर्थक न बनकर अरुणा आसफअली आदि उग्रवादियों के अनुयायी हो गये इसके बाद उन्होंने पत्रकारिता की ओर रुख किया और एक विशिष्ट लेखक एवं पत्रकार के रूप में रचनात्मक गतिविधियों में लगे रहे, और जीवन को मार्क्सवादिता के प्रति समर्पित किया, लेकिन कुछ समय बाद ही उन्हें मार्क्सवादी कार्यकर्ताओं के झूठे, आचरणों और नकली ढ़कोसलों से उन्हें बाहर निकलना उचित लगा, तो उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया। स्वामीनाथन कलाकार के रूप सम्पूर्ण व्यक्तित्व के रूपान्तरण

दर्पण हैं, जहाँ वह अपने प्रतिबिम्ब के समीप होते हैं विविध कारणों से जिन्दगी जीने वाले स्वामीनाथन सैदव पाँच सितारा संस्कृति से दूर जमीनी जुड़ाव की बात करते थे।²

तत्पश्चात उन्होंने पूर्णरूप से अपना जीवन को कला के प्रति समर्पित कर दिया। 1956 ई0 में स्वामीनाथन का विवाह हो गया था, इसके बाद उन्होंने जीवन की छलनाओं से मुक्त होने की और एक व्यवस्थित सार्थक उद्देशपूर्ण जीवन की जीने की आवश्यकता महसूस की तथा साहित्य और चित्रकला को जीवन का लक्ष्य बनाया। जब जगदीश स्वामीनाथन ने चित्रकला क्षेत्र में प्रवेश किया, तो प्रारम्भ में उन्हें अनेक सघर्षों एवं द्वंद्वों का सामना करना पड़ा, क्योंकि वे किसी अवधारणा से नहीं बँधते थे और एक स्वतन्त्र विचारधारा वाले चित्रकार थे। चित्रकला कार्य सीखने के लिए उन्होंने दिल्ली के पॉलिटेक्नीक में चित्रकला का अध्ययन किया। जहाँ पर नौ माह रहे। कुछ समय बाद 1958 ई0 में ललित कला अकादमी से छात्रवृत्ति मिलने पर पौलेण्ड से एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स वॉरसा में कला अध्ययन किया, जहाँ पर उन्हें बहुत सम्मान मिला। हालाँकि स्वामीनाथन विचारों के अनुसार वहाँ उन्होंने जो कला कार्य सीखा उस कला कार्य से वे प्रभावित नहीं हुये, क्योंकि वहाँ की कला उनकी स्वतंत्र कलात्मक दृष्टि और विचारों के अनुरूप नहीं थी।

स्वामीनाथन एक आत्मलोचन कलाकार थे, जो अपनी कला में निरन्तर आत्ममंथन और मूल्यांकन करते रहते थे। उनके जीवन में कला का सबसे अहम पक्ष हैं, उनकी सतह का विनियोजन। यह सतह दर्शक को विचलित करती हैं। सतह छूती हैं और अपनी रिवित में भी गहरे अर्थ के रहस्यों को प्रकट करती हैं।³

भारत एवं वॉरसा से कला कार्य सीखने के बाद स्वामीनाथन ने अपनी कला-दृष्टि विकसित की, वे पारंपरिक और पश्चिमी कला-शैलियों के बीच किसी प्रकार का विभाजन उन्हें स्वीकार्य नहीं था, उनका मानना था कि जिस प्रकार भाषा की कोई निश्चित सीमा नहीं होती, उसी प्रकार कला को भी उसी प्रकार किसी सीमा-रेखा से नहीं बाँधा जा सकता हैं, कला मूलतः स्वतन्त्र होती हैं और कलाकार को अपनी भावनाओं और अनुभूति के अनुसार कला अभिव्यक्ति करने का अधिकार होना चाहिए। उनके विचारों के अनुसार भारतीय कला का मूल लोककला और आदिवासी कलाओं की कला परम्परा में हैं। भारतीय कला-परम्परा के प्राचीन उदाहरणों में जिन्हें भारतीय कला परम्परा का मूल माना गया हैं, वे भी अजन्ता-एलोरा में स्थित हैं जो बौद्धमत पर आधारित-हिन्दु त्रिवर्ण हैं, जो समसामयिक कला थी और अपने समय की कला दृष्टि और अभिव्यक्ति करती थी। आगे चलकर जब देश में मुगलों का आगमन हुआ तो मिनियेचर कला विकसित हुई, उसके बाद बसौली, कोंगड़ा जो हिन्दु राजाओं द्वारा चित्रित की गई समकालीन कला थी जिनमें धार्मिक, पौराणिक तथा सांस्कृतिक विषयों को प्रमुखता दी गई। हालाँकि जे स्वामीनाथन कला को इस प्रकार विभिन्न शैलियों में बाँटकर देखने के पक्ष में नहीं थे। उनके अनुसार कला किसी निश्चित शैली, परम्परा और भौगोलिक सीमा तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह कलाकार की स्वतन्त्र अनुभूति, विचार और अभिव्यक्ति का माध्यम थी।

स्वामीनाथन ने पश्चिम कला के बारे में वहाँ पनप रही कला में जो कला न होकर प्रवृत्तियाँ थी, उनका विरोध किया, जो मानवविरोधी एवं मानव असतित्व के लिये पतन्मोमुखी सभ्यता हैं। कला विचार, एवं उनकी भावनाएँ किसी देश एवं किसी राष्ट्र से जुड़ी न होकर मानव हित से जुड़ी थी।

“वे कला में तीसरी दूनिया, दूसरी दूनिया जैसी जो श्रेणियों के विरुद्ध थे उनकी कला मानव जाति के पक्ष में हैं। स्वामीनाथन ने कलाकार को समाज के लिए मार्गदर्शक बताया एक कलाकार समाज की समस्याओं को समझकर उन समस्याओं का हल मनोविदता से भी दर्शाता हैं। जिसकी खोज समाज के लिए लाभदायक होती है। वरन ये कला विशिष्ट होनी चाहिये। उन्होंने समाज में कलाकार को दूसरों की भाँति साधारण मानव ही माना, लेकिन वह अपनी प्रतिभा से अपनी कला को विशिष्टता अवश्य दे सकता हैं।

1950 में जब उन्होंने एक पूर्ण कलाकार बनने का निर्णय लिया और व्यवस्थित रूप से कला कार्य करना आरम्भ किया। भारतीय कला संस्कर्षित को नवीन दृष्टि प्रदान करने के लिये 1963 में 12 कलाकारों के साथ मिलकर ग्रुप 1890 नाम से स्थापित किया, जिसके प्रमुख कलाकारों में जेराम पटेल, राजेश मेहरा, गुलाम शेख, राघव कनेरिया, हिम्मत शाह, ज्योति भट्ट, अम्बादास, रेडप्पा नायडू, बालकृष्ण पटेल, एस जी विक्रम तथा बोवेन आदि थे। कलाकारों के इस समूह ने अपने घोषणापत्र के माध्यम से अशिष्ट प्रकृतिवाद बंगाल स्कूल के देहाती आदर्शवाद एवं यूरोपीय आधुनिकतावाद के संकर सोच के विरुद्ध एक प्रहार करते हुए एक नई कलात्मक दृष्टि और धारणा स्थापित की उनकी कला की मूल प्रेरणा यह थी कि एक रचनात्मक कलाकार अपनी कला के विषय में रचित घटनाओं को उनकी मूल वास्तविक अवस्था में ही देखे और अनुभव करे। स्वामीनाथन ने इस ग्रुप के रूप में भारतीय कला को नवीन दृष्टि प्रदान की और नयी प्रतिभा के कलाकारों को अन्य दलों के प्रहारों से बचाना भी इस ग्रुप का प्रमुख उद्देश्य भी था। 1963 में स्वामीनाथन एवं ग्रुप 1980 के कलाकारों ने अपनी चित्र प्रदर्शनी की। इस कला प्रदर्शनी में उनके समूह कलाकारों ने अपने चित्रों में विशुद्ध रूप से वैचारिक परिदृश्यों को चमकीले रंग के क्षेत्रों में विभाजित करके नवीन धारणा को चित्रात्मक रूप प्रदान किया। जिसमें स्वामीनाथन ने प्रकृति को अपनी कला का मूल आधार बनाया। उन्होंने पहाड़, पानी, वृक्षों के विस्तार और चिड़ियां जो एक आदर्श पक्षी के रूप में एवं उड़ते पत्थरों के प्रकृति रूप चित्रित कर अपनी विशिष्ट चित्र-भाषा के द्वारा प्रस्तुत किया।



1968-70 में उन्होंने समकालीन कला में देव प्रतिमाओं के महत्व के विषय पर कार्य किया, जिसके लिये उन्हें नेहरू फेलोशिप भी मिली। चित्रकला में अनेक कार्य में उन्हें प्रसिद्धि मिली। 1969 में उन्हें एक अंतर्राष्ट्रीय कला द्विवार्षिकी, जो साओपोलो में आयोजित की गई थी, उसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर का ज्यूसी सदस्य बनाया गया। स्वामीनाथन उत्कृष्ट कलाकार के साथ-साथ एक प्रभावशाली

कला-विचारक और आलोचक भी थे। वे जिस भी कार्य को करते थे, अपनी अमिट छाप छोड़ देते थे। ज्युरी के रूप में भी उन्होंने कला के लिए नए उन्मेष को प्रकाशित करने वाली कला का अनुमोदन किया, जिससे उनका नाम विश्व स्तर के कलाकारों में जाना गया।

उन्होंने भारतीय कला को एक स्वतन्त्र, सुदृढ़ और विश्व स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय अनेक कलाकार पश्चिमी कला की नकल कर रहे थे, जिसके कारण भारतीय कला में पारम्परिकता के दबाव के आधार पर क्षीणता के लक्षण शुरु हो गये थे, जिससे भारतीय कला की मौलिकता प्रभावित हो रही थी। स्वामीनाथन ने इस प्रवृत्ति के विरुद्ध अपने लेख लिखे एवं अपने लेखों के माध्यम से विचार व्यक्त किए और एक कला-आलोचक एवं कला समीक्षक के रूप में अलग पहचान बनाई। वर्ष 1966 में अपनी पत्रिका क्रांटा का प्रकाशन किया, जिसमें अपने आलेखों के माध्यम से भारतीय विचार-पद्धति के साथ-साथ भारतीय कला प्रवृत्तियों को एक स्वतन्त्र कलात्मक दृष्टि के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने चित्रों की अनेक प्रदर्शनी भारत और विदेशों में आयोजित की। कला के प्रति उनके समर्पितभाव, संघर्षशीलता और निरन्तर सक्रियता के कारण उन्हें 'जुझारू कलाकार' कहा गया।

समकालीन वैचारिक चिंतक, चर्चित चित्रकार मनजीत बाबा के अनुसार, स्वामीनाथन ने तमाम कलाओं में सृष्टि की खोज में अपनी सारी शक्ति लगा दी। यह उन्होंने न केवल अपने कार्य में किया सृष्टि को खोजने का प्रयास किया, बल्कि दूसरे चित्रकारों के कार्यों में भी सृष्टि को देखने की निरन्तर चेष्टा की। स्वामीनाथन चित्रकार होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट समालोचक दृष्टि भी थी, जो किसी भी चित्रकृति में निहित सृष्टि की विशेषता को पहचान सकते थे और इसे पूरी निश्छलता के साथ कह भी सकते थे। निश्चय ही उनकी आवाज में बड़ी ताकत थी, क्योंकि वह आवाज निस्वार्थ थी। स्वामीनाथन ने कला और प्रेरणा के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध माना है। उन्हें कला प्रेरणा के लिए प्रकृति को चुना जिसमें प्रकृति के उतार-चढ़ाव जैसे कभी ठण्ड, कभी गरमी, कभी आँधी तो कभी बरसात, कभी फूलों से भरे बगीचे तो कभी पतझड़ और अपार समुद्र को देखा वहीं हिमालय जैसा दृढ़ पहाड़ एवं प्रकृति की जीवनदायिनी कलकल बहती नदियाँ, तो कहीं पोखर-तालाब में टर्टरते मेंढकों का स्वर, चाहे पूर्णिमा का चाँद हो या काली अन्धेरी राते, कलाकार प्रेरणा तो कहीं से भी प्राप्त कर सकता है। यदि वह निष्ठावान और प्रतिभाशाली हो। इसके अतिरिक्त उनकी कला प्रेरणा वर्तमान समयकाल एवं सामाजिक परिस्थितियों से भी प्रेरित थी, जिनमें विषयों में कहीं आकाशचुम्बी इमारते हैं। तो कहीं झुग्गी झोपड़ी, कहीं गाड़ी से जाता मोटा तोंदियल सेठ हैं, तो कहीं सड़क के किनारे पड़ा हड्डियों का ढाचा मात्र भिखारी, कहीं पर अबला नारी के साथ समाज के दृष्टिकोण और कहीं पर मजदूर महिला सिर पर ईट-गारा ढोती हैं, आदि अनेक प्रेरणास्त्रोत उनकी कला को प्रभावित करते थे। जे० स्वामीनाथन पहाड़, पेड़ और चिड़ियाओं के चिंतन विरल चितरे हैं। सोचता हूँ, यह सब तो कैनवास पर बहुत-से और कलाकारों ने भी बनाए हैं, फिर स्वामीनाथन से ही इनकी पहचान क्यों? शायद इसलिए कि रंग, रूप और विन्यस्त भावों की उनकी अंवेरी कैनवास लय विरल हैं, अनुभूति की सहज साधना लिए। वे कहते भी थे- 'समूची कला ब्रह्माण्ड के रहस्यों का उदघाटन है।' और स्वयं उन्होंने ऐसा करते जीवन से जुड़ी संवेदनाओं को अपनी कला में जैसे गहरे

से बुना, उन्हें आदिवासी कलाओं की तुलना को पहचानते हुए उसे बखूबी आधुनिक कलाओं के समानान्तरण विश्लेषित भी किया।⁴

उन्होंने अपने राजनैतिक और सामाजिक जीवन से प्राप्त दृष्टिकोण से प्रभावित होकर रंगों के अन्दर जीवन की सार्थकता को उतारा है। उनकी कला में सार्थकता, नैतिकता और सामाजिकता के साथ-साथ बन्धनों से मुक्ति तथा स्वच्छंदता की भावना भी दिखाई देती है। उनके विचारों के अनुसार कुछ सामाजिक परिस्थितियाँ और नियम ऐसे हैं, जिनमें कलाकार कभी फिट नहीं हो पाता, इसलिये वे कलाकार को हर प्रकार के बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र और स्वच्छंद जीवन की बात करते हैं, पर यह एक धोखा लगता है, इसलिए कलाकार की कला में स्वतन्त्रता और प्रभावशालीता का होना आवश्यक है।

स्वामीनाथन की कला भी निजी संवेदनाओं तक सीमित नहीं रही बल्कि वे समकालीन कला के प्रणेता और युग निर्माता भी बन गए। उन्होंने अपने समय के सामाजिक सरोकारों को महत्व देते हुए स्वयं को युग की चेतना से जोड़ा। कोई भी चित्रकृतियों की उपलब्धि उससे पड़ने वाले प्रभाव पर निर्भर करती है। समकालीन कला में निहित विचार और दृष्टिकोण समाज के जीवन और चेतना का अभिन्न अंग होते हैं। किसी अच्छी कलाकृति की अन्तर्निहित शक्ति केवल उसके काल में नहीं बल्कि उसके सृजक के दृष्टिकोण और उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति में निहित होती है।

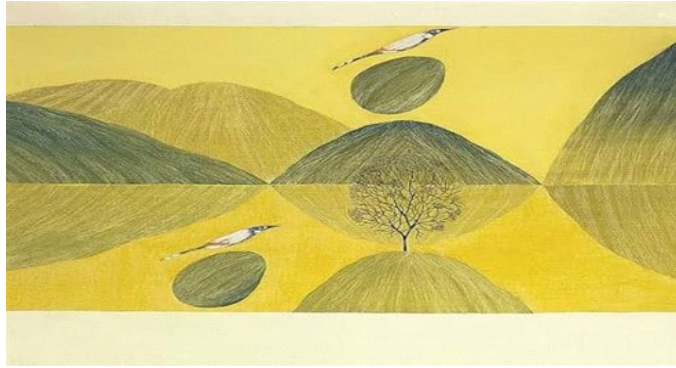


“उनकी कला में प्रकृति न तो लैण्डस्केप है न कोई अवधारणात्मक युक्ति, प्रकृति रंगस्थली है। क्रीड़ा भूमि स्वामी के नजदीक प्रकृति मनुष्य का शाश्वत पड़ोस और इतिहास दोनों ही हैं।”⁵

कलाकार स्वामीनाथन ने मूर्त तथा अमूर्त दोनों रूपों में चित्रण किया है। उनकी कला में मौलिकता की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी कलाकृतियों में विभिन्न तत्वों का समन्वय ही उनकी पूर्णता का आधार है। एवं समस्तता का योग ही पूर्ण आधार है। उनकी कलाकृतियाँ प्रकृति, आत्मलोचन, एवं संघटक तत्वों का सार हैं। उनकी कला में इस योग का रूपात्मक एकत्व का अंश है, ये रूपात्मक एकत्व सम्पूर्ण तत्कालीन समस्याओं का सामाधान भी हैं जो एकत्व का नियम रूप के जीवन्त अनुभव के स्तर पर एकत्व के क्षण पाये विभिन्न स्तरों को एक सूत्र में बाँधकर उन्हें समग्र रूप प्रदान करता है।

जे0 स्वामीनाथन ने भारतीय कला क्षितिज पर अपनी एक नई, एक विशिष्ट शैली के साथ कदम रखा। जिसे वे निरन्तर निखारते और विकसित करते रहे। वे कैनवास पर कुछ ऐसे रूपाकारों में प्रकृति, लोकजीवन तथा आदिम चेतना को उभारते थे जो प्रकृतिवादी भाव से विशेषतः बिम्ब हैं।⁶

स्वामीनाथन के चित्रों का प्रमुख आधार प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक कला में पाये जाने वाले प्रकृति प्रतीक हैं। उन्होंने आदिम सभ्यता के टोटम-चिन्ह को अपनी कला में जादुई प्रभाव के साथ रूपायित किया। स्वामीनाथन की कलाकृतियों के रूप दर्शक के संवेदना-तन्त्र में अपरिमित बदलाव लाते हैं जिससे दर्शक की मानसिक संवेदना प्रबल और तीक्ष्ण हो जाती हैं। स्वामीनाथन ने अपने चित्रों में दृश्य-क्षेत्र को पुरोमुखी स्तर पर विन्यस्त कर पुरोन्मुखता की रूपात्मक तार्किकता के नियम का पालन किया है। जिससे स्पष्ट होता है कि उनकी कलाकृतियाँ सौंदर्यशास्त्रीय रूढ़ियों और परम्परागत मान्यताओं से मुक्त होकर अपनी स्वतन्त्र कलाभाषा विकसित करना चाहती हैं, और सौन्दर्यशास्त्र की उस तार्किकता के विरुद्ध हीनताबोध से भी मुक्त होना चाहती हैं। इनके अतिरिक्त स्वामीनाथन ने काल्पनिक आकृतियों में ज्यामितीय, अन्तरिक्ष के रंग-विन्सास तथा ज्यामिति रूपों के द्वारा कला में तांत्रिक प्रभाव उत्पन्न किया। उनकी हल्की रंग योजनाएँ रंगों के संयोजन, पारदर्शिता और सूक्ष्म रंग-सन्तुलन के माध्यम से स्रजित होती हैं। स्वामीनाथन के इन चित्रों के रंगों में न कही वैपरीत्य हैं, न उभार, और न गहराई केवल बिम्ब-योजना का प्रतिबिम्ब दर्शित हैं।



“स्वामीनाथन ने प्रकृति से प्रतीको का चयन करके आड़े-तिरछे, कोमल, पारदर्शी तथा विशाल आकार के पर्वतों का चित्रण किया है। जिन्हें गुरुत्वाकर्षण से मुक्त होकर आकाश में बड़े सहज भाव से विचरण करते दिखाया गया है। कभी-कभी इन पर कोई पक्षी बैठा अंकित रहता है पर्वत के नीचे या पहाड़ी के शिखर पर एक पुष्पित झाड़ी का अंकन रहता है, अपने प्रथम बसन्त को प्रदर्शित करता कोई पौधा, तुलसी, चेरी या गुलमोहर कभी-कभी आकाश में उपजा कोई वृक्ष भी चित्रित होता है, जिसकी जड़ें तथा शाखाएँ आकाश में ही फैली रहती हैं। आकाश अत्यधिक प्रकाश युक्त होता है, कभी पीले वृत्त अथवा चन्द्राकार चिन्हों द्वारा आच्छादित पहाड़ियों से आकाश में पक्षी जैसी कोई वस्तु जो उड़ती-सी भी है और स्थिर सी भी है। चित्र का सम्पूर्ण प्रभाव अतीन्द्रिय लोक में ले जाता है, इससे वे बाह्य के अभी तक अनुभूत पक्षों का अनुभव करना चाहते हैं। उनके चित्रों में अंकित वस्तुएँ केवल रंग के चमकदार धब्बे हैं।”

स्वामीनाथन एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिनके चित्र तो विशिष्ट थे ही भारतीय कला के लिये उनका दृष्टिकोण भी अत्यंत विशिष्ट था, जो उनके कला सिद्धान्तों से परिलक्षित होता है। इसलिए स्वामीनाथन ने भारतीय समकालीन कला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1970 में स्वामीनाथन

ने ललित कला अकादमी के कार्यो एवं पुनर्गठन का विरोध किया तथा इसके लिए कलाकारों के प्रोटेस्ट मूवमेन्ट का नेतृत्व करते हुए अपना विरोध जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार ने उनके सुझावों को स्वीकार किया और केन्द्रीय ललित कला अकादमी में देश व्यापी कलाकारों के चुनाव की पंचवर्षीय योजना को लागू किया, जिससे कला जगत में उन्हें भारतीय कला गतिविधियों का प्रमुख सहयोगी भी माना गया, इसके परिणामस्वरूप उन्हें 1981 ई0 में भोपाल में रूपंकर का प्रथम निर्देशक बनाया गया। वे कला के विकास और कलाकारों के प्रोत्साहन के लिये निरन्तर कार्य करते रहे, उन्होंने रूपंकर कला संग्रहालय में आदिवासी एवं लोक-कला शैलियों के कला-रूपों का सुन्दर संग्रह स्थापित किया और आदिवासी युवा गोंड कलाकारों को प्रोत्साहन भी किया।

1982 में उन्होंने गोंड युवा कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम को भारत भवन ग्राफिक आर्ट्स विभाग से जोड़ा तथा उनके चित्रों की प्रदर्शनी भी आयोजित करायी। स्वामीनाथन एक प्रयोगधर्मी, विनम्र एवं विभिन्न प्रतिभाओं के धनी, महान कलाकार थे। स्वामीनाथन की व्यक्तित्व की विशिष्टता पूरे विश्व के सामने आयी जब उन्हें भारत भवन भोपाल का कला निर्देशक बनाया गया और उन्होंने मध्यप्रदेश की उपेक्षित आदिवासी इलाकों के आदिवासियों को प्रोत्साहन दिया। स्वामीनाथन को अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1968 ई0 में अन्तर्राष्ट्रीय त्रिनालें में उन्हें सम्मानित किया गया था। भारत की नेहरू फ़ैलोशिप भी प्रदान की गयी थी वे अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में ज्यूरी भी बनाये गये जो अपने आप में एक गर्व की बात थी। 1994 ई0 में मात्र 65 साल की उम्र में हृदय की गति रुक जाने से स्वामीनाथन की मृत्यु हो गयी। जिससे पूरे कला जगत में शोकाकुल वातावरण बन गया था। उनकी मृत्यु की खबर पर आग तो मौत की सी चुप्पी में ही जलती है और वह जली। 1995 ई0 को उन्हें मरणोत्तर कालिदास सम्मान प्रदान किया गया

सन्दर्भ

1. भारतीय कला के हस्ताक्षर, जोशी डॉ0 ज्योतिष, सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार –2013, पृ0सं0–207
2. समकालीन भारतीय कला, चतुर्वेदी डॉ0 ममता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर –2022, पृ0सं0–150
3. भारतीय कला के हस्ताक्षर, जोशी डॉ0 ज्योतिष, सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार –2013, पृ0सं0–210
4. भारतीय कला, व्यास डॉ0 राजेश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार संस्करण –2020, पृ0सं0–91
5. जगदीश स्वामीनाथन की कला आधुनिकता का प्रसन्न क्षण I हैं। अशोक वाजपेयी 09-07-2023, विचार विशेष soffronart.com
6. आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, गोस्वामी डॉ0 प्रेमचन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, संस्करण –2021, पृ0सं0–104
7. आधुनिक भारतीय चित्रकला, अग्रवाल डॉ0 गिराज किशोर संजय पब्लिकेशन आगरा पृ0सं0–175